# छायावाद में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति

## ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय के
## हिन्दी विषय में
## पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

## शोध–प्रारूप

“बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ”


शोध निर्देशक
डॉ. राजबाला

शोधार्थी
हंसा जाट
EN.NO JVR-112259

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर राजस्थान


2023

पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध विषय की रूपरेखा

1 शोध शीर्षक

2 विषय परिचय

3 शोध के उद्देश्य

4 साहित्य का पुनरावलोकन

5 शोध प्रविधि

6 शोध की परिकल्पनाएँ

7 शोध का महत्त्व एवं प्रासंगिकता

8 शोध कार्य की प्रस्तावित अध्याय योजना

9 संदर्भ ग्रंथ सूची

# शोध शीर्षक :— छायावाद में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति

**विषय परिचय :—** छायावाद के मूल्यांकन का प्रश्न केवल छायावाद युग की कविता के मूल्यांकन से जुड़ा नहीं है बल्कि, 19वीं शताब्दी की हिन्दी कविता के साथ उसके साहित्य में बहुस्तरीय उच्चता के प्रश्न से भी जुड़ा है। 'छायावाद' का समय भारत तथा विश्व में हो रहे राजनीतिक—परिवर्तनों का समय है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की लड़ाई एक नए दौर में जा चुकी थी। परिवर्तन के इस रूप से साहित्य स्पंदित हो रहा था, स्पंदन की प्रक्रिया साहित्य परिवर्तन को और विस्तार दे रही थी। इस विस्तार में साहित्य की मौलिकता और परिवर्तन की प्रक्रिया दोनों साथ—साथ कार्य कर रही थी। परिवर्तन और मौलिकता की इस प्रक्रिया में छायावाद के ऊपर जो मुख्य आरोप थे, वो ये कि, यह बांग्ला कविता से प्रभावित है और कविता में रहस्यवाद की प्रधानता है। शुक्ल जी के आरोप में जो मुख्य दिक्कत थी कि 'रहस्यवाद' को धर्म दर्शन तक सीमित कर वो देखते थे। 'रहस्यवाद' के संदर्भ में ऐसी स्थिति थी नहीं, क्योंकि भारतीय साहित्य में 'रहस्यवाद' की उपस्थिति पहले से मौजूद थी और वो साहित्य को भी प्रभावित करता था।

प्रत्येक नया साहित्यिक आन्दोलन चली आ रही साहित्यिक धारा के बीच से ही जन्म लेता है। इसके पीछे तत्कालीन सामाजिक—राजनीतिक घटनाओं का प्रभाव हो सकता है। छायावाद के प्रादुर्भाव काल में भी तमाम तरह के आरोप लगे थे। ''छायावाद के जन्मकाल में आचार्यों ने उसे बंग्ला और अंग्रेजी की जूठन कहकर उसकी व्याख्या करने के कष्ट से बचना चाहा। फिर शैली विशेष कहकर उसे टाल दिया। कुछ समर्थकों ने उसे 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा और कुछ न 'शिशु कवि के लिए उसे माँ की गोद' बताया।''[1] तथा ''अंग्रेजी की रोमांटिक कविता और बंग्ला में रवीन्द्रनाथ के गीतों स उन्होंने नयी हिन्दी कविता की तुलना की और वे इस नतीजे पर पहुँचे कि उसमें मौलिकता नहीं है, वह भारतवर्ष की पवित्र भूमि के लिए एक विदेशी पौधा है, जो यहाँ पनप नहीं सकता।'' इन सब शंकाओं और आशंकाओं को निर्मल करता हुआ, छायावाद भारतीय धरती पर पुष्पित और पल्लवित हुआ। ''छायावाद हमारी विशेष सामाजिक और साहित्यिक आवश्यकता से पैदा हुआ और उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए उसने ऐतिहासिक कार्य किया। समाज और साहित्य को उसने जिस तरह पुरानी रूढ़ियों

से मुक्त किया, उसी तरह आधुनिक राष्ट्रीय और मानवतावादी भावनाओं की ओर भी प्रेरित किया। व्यक्तित्व की स्वाधीनता, विराट–कल्पना, प्रकृति साहचर्य, मानव–प्रेम, वैयक्तिक प्रणय, उच्च नैतिक आदर्श, देशभक्ति, राष्ट्रीय स्वाधीनता आदि के प्रसार द्वारा छायावाद ने हिन्दी जाति के जीवन में ऐतिहासिक कार्य किया।

छायावाद हिन्दी कविता के एक विशेष युग में पुरानी कविता के विरोध में निकला हुआ एक विशेष भावानात्मक दृष्टिकोण, एक विशेष दार्शनिक अनुभूति और एक विशेष शैली है, जिसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक का तथा अलौकिक प्रेम के सहारे लौकिक अनुभूतियों का चित्रण होता है। ऐसे काव्य में प्रकृति को मानवीरूप मे प्रस्तुत किया जाता है। इसमें गीति–तत्व की प्रमुखता रहती है।

छायावादी कविता की शुरूआत प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान 1916–20 में हुई थी। सबसे पहले छायावाद शब्द का इस्तेमाल मुकुटधर पाण्डेय ने "शारदा" नामक एक पत्रिका में सन 1920 में किया था। लेकिन यह नाम उन्होंने छायावादी काव्य की अस्पष्टता के कारण दिया था। छायावादी कविता उस समय के तत्कालीन स्वच्छंदतावादी आंदोलनों से जुड़ी हुई थी। यह काव्य स्वच्छंद, कल्पनापूर्ण, और भावुक है। भाषा, भाव, छंद, शैली और अलंकार की दृष्टि से इसका पुरानी कविता से कोई मेल नहीं है। वस्तु निरूपण की जगह अनुभूति निरुपण को स्थान मिला। छायावाद को स्वच्छंदतावाद भी कुछ लोग कहते हैं। आलोचक नगेन्द्र ने छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह माना है। इसका मतलब है – उपयोगिता के प्रति भावुकता का, नैतिक रूढ़ियों के प्रति मानसिक स्वतंत्रता का और परंपराबद्ध काव्य के प्रति कल्पना का विद्रोह। आलोचक नामवीर सिंह छायावाद को व्यक्तिवाद की कविता कहते हैं, जिसका आरंभ व्यक्ति के महत्व को स्वीकार करने और करवाने से हुआ है। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा इस युग के चार प्रमुख स्तंभ हैं।

आधुनिक काल के छायावाद का निर्माण भारतीय और यूरोपीय भावनाओं के मेल से हुआ है, क्योंकि उसमें एक ओर तो सर्वत्र एक ही आत्मा के दर्शन की भारतीय भावना है और दूसरी ओर उस बाहरी स्थूल जगत के प्रति विद्रोह है, जो पश्चिमी विज्ञान की प्रगति के कारण

अशांत एवं दुःखी है। सन् 1918 ई० के आस–पास द्विवेदी युग की काव्यधारा के बीच रीतिकालीन काव्यप्रवृत्तियों के विरोध में इस नवीन काव्यधारा का जन्म हुआ।

छायावाद का युग भारत के लिए अस्मिता की खोज का युग है। सदियों की दासता के कारण भारतीय जनता आत्मकेंद्रित होती हुई रूढ़िग्रस्त हो गई थी। पाश्चात्य साम्राज्यवादियों के आगमन ने देश में एक विराट तूफान पैदा कर दिया था, जिसके कारण रूढ़ियों से सुस्त देश की आत्मा पूरी शक्ति और उद्वेलन के साथ जाग उठी।

**छायावाद का आविर्भाव**

छायावादी काव्य का प्रादुर्भाव कब से माना जाए, इस पर आलोचकों के मत अलग–अलग हैं। इस आन्दोलन के उदय को लेकर विद्वानों की राय कभी एक नहीं रही। अपनी–अपनी वैयक्तिक रुचि–अभिरुचि के आधार पर विभिन्न आलोचकों ने अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद के प्रवर्तन का श्रेय मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय को दिया है – "हिन्दी कविता की नई धारा–छायावाद का प्रवर्तक इन्हीं को विशेषतः मैथिलीशरण गुप्त और मुकुटधर पाण्डेय को समझना चाहिए।" प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार इलाचन्द जोशी शुक्ल जी के इस निष्कर्ष से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार जयशंकर प्रसाद (इन्द् पत्रिका में प्रकाशित आरम्भिक रचनाओं तथा बाद में प्रकाशित झरना काव्य–संग्रह के आधार पर) छायावाद के प्रवर्तक हैं। विनयमोहन शर्मा एवं प्रभाकर माचवे ने छायावाद के प्रवर्तन का श्रेय माखनलाल चतुर्वेदी को दिया है। रायकृष्णदास ने सुमित्रानन्दन पन्त को छायावाद का प्रवर्तक घाषित किया है।

**छायावाद काल–नामकरण एवं सामान्य अर्थ**

छायावाद का सामान्य अर्थ प्रतीकवाद से सम्बद्ध है। जब हिन्दी कविता में प्रतीकों का यथास्थान, यथासम्भव अधिकाधिक प्रयोग किया जाने लगा, तब उसे दुरूह और असहज मानकर प्रतीकवादी कविता या दूसरे अर्थों में छायावादी कविता कहा जाने लगा। कतिपय आलोचक काफी समय तक छायावाद और रहस्यवाद को एक ही मानते रहे हैं, जबकि

छायावाद और रहस्यवाद दोनों एक दूसरे के पर्याय नहीं हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शुक्ल जी के इस मत का पुरजोर खण्डन करते हैं तथा बंग्ला में छायावाद के प्रचलित होने का विरोध करते हैं।

हिन्दी में हम जिसे छायावाद के नाम से जानते हैं, उस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मुकुटधर पाण्डेय के निबन्ध हिन्दी में छायावाद, जो शारदा पत्रिका (सन् 1920) में प्रकाशित हुआ था, में प्रयुक्त हुआ दिखाई देता है। मुकुटधर पाण्डेय ने छायावादी शब्द का प्रयोग उन कविताओं के लिए किया था, जिनमें उन्हें अस्पष्टता और भावों का धुँधलापन दिखाई पडा। उसी वर्ष (सन् 1920) सरस्वती में सुशीलकुमार का भी एक लेख उपर्युक्त नाम से प्रकाशित हुआ। उसके बाद छायावाद नाम चल पड़ा और चर्चित होता गया। वस्तुतः छायावाद शब्द उस विशिष्ट काव्यधारा के लिए चल पड़ा और रूढ़ हो गया, जिसकी अधिकांश कविताएँ रोमेंटिक प्रवृत्तियों से ओत–प्रोत थीं।

## छायावाद के प्रमुख कवि

छायावाद के प्रमुख कवियों में मुकुटधर पाण्डेय, मैथिलीशरण गुप्त, श्री रायकृष्णदास, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, भगवतीचरण वर्मा, रामकुमार वर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', माखनलाल चतुर्वेदी, सुमित्राकुमारी सिन्हा, विद्यावती कोकिल के नाम सम्मिलत किए जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त मोहनलाल महतो 'वियोगी', नरेन्द्र शर्मा, उदयशंकर भट्ट, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', हरिकृष्ण प्रेमी, जानकी वल्लभ शास्त्री, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' इत्यादि के नाम भी छायावादी कवियों में परिगणित किए जाते रहे हैं, जिनमें से अनेक कवि परवर्ती काल में अन्य काव्यधाराओं से जुड़ गए।

## छायावादी साहित्य में राष्ट्रीयता

राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति और देश प्रेम के उदात्त भावों से ओत–प्रोत कविताओं का सजन आधुनिक हिन्दी कविता की एक उल्लेखनीय विशेषता है। छायावादी काव्य में राष्ट्रप्रेम प्रमुख तत्त्व के रूप में उभरकर आया है। इस कारण आधुनिक काल में राष्ट्रप्रेम काव्य रचना की प्रमुख राष्ट्रीय प्रवृत्ति के रूप में उभरी। हिन्दी में भारतेन्दु और उनके परवर्ती लगभग सभी

कवियों ने अपनी कविताओं में राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति की है। छायावाद इस दृष्टि से बहुत समृद्ध है। राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत रचनाओं की सृष्टि सभी छायावादी कवियों ने की हैं। जयशंकर प्रसाद, निराला, पन्त, महादेवी की कविताओं में राष्ट्रीयता और देश–प्रेम की भावना प्रमुखता से व्यक्त हुई है। अतीत के गौरवगान के क्रम में भारत–स्तवन, भारत–वन्दना का तीव्र स्वर सभी छायावादी कवियों की रचनाओं में सुनाई देता है। हिमाद्रि तुंग शृंग, अरुण यह मधुमय देश हमारा, भारत जननी, भारत माता, भारत वर्ष, ग्राम्या के कई गीत इसी राष्ट्रीय भावना का उद्घोष करते हैं।

छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का सबसे उल्लेखनीय और प्रमुख काव्य आन्दोलन कहा जा सकता है, जो तत्कालीन युग–परिवेश और परिस्थितियों में द्विवेदी युगीन कविता की यत्किंचित प्रतिक्रिया होते हुए भी उसी की व्यापक पीठिका पर उसी के क्रोड़ से जन्मा और विकसित हुआ था। छायावाद ने हिन्दी कविता को न केवल बहुविध नवीनता और नूतन काव्य प्रवृत्तियों से संवलित किया। भाषा, भाव, कथ्य, शिल्प, रचनाविधान, नूतन अलंकार–विधान आदि दृष्टियों से छायावाद ने हिन्दी कविता को शिखर पर स्थापित करने का प्रयास किया, काव्यरचना का मोहक परिवेश निर्मित किया। छायावादी कविता में कल्पना, प्रेम, निराशा, पलायन आदि रोमेंटिक प्रवृत्तियो की बहुलता के कारण उसे रोमेंटिक कविता भी कहा जाता है।

छायावाद पर हालाँकि अनक आरोप लगाए गए, जिसके अन्तर्गत उसके जनजीवन से बहुत दूर हो जाने का उल्लेख किया जाता है। अतिकल्पना, अतिभावुकता, अतिआन्तरिकता के कारण छायावादी कविता के अति अन्तर्मुखी हो जाने से, वह हृदय के अन्तर्जगत की वस्तु बन गई, बाह्य जगत् से उसका सम्पर्क भी कम होता गया। प्रेम और सौन्दर्य के चित्रण में उसकी विलक्षणता सर्वमान्य है। काव्यरचना का उसका मोहक, कोमल रूप पाठक के हृदय पर जादू जैसा असर डालता है। इस दृष्टि से रामधारीसिंह दिनकर की टिप्पणी बहुत प्रासंगिक है– ”यह आन्दोलन विचित्र जादूगर बनकर आया था। जिधर भी इसने एक मुट्ठी गुलाल फक दी, उधर क्षितिज लाल हो गया।“ छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का एक पूर्ण आन्दोलन था। छायावादी काव्यान्दोलन में कलात्मक दृष्टि से हिन्दी कविता की जैसी उन्नति हुई, वह आधुनिक हिन्दी कविता की सर्वाधिक उल्लेखनीय साहित्यिक घटना है। यहाँ डॉ. नगेन्द्र की

टिप्पणी प्रासंगिक है – "जिस कविता ने जीवन के सूक्ष्मतम मूल्यों की पुनःप्रतिष्ठा द्वारा नवीन सौन्दर्य चेतना जगाकर एक वृहत समाज की अभिरुचि का परिष्कार किया, जिसने हमारी कला को असंख्य अनमोल छायाचित्रों से जगमगा दिया... उस कविता का गौरव अक्षय है। उसकी समृद्धि की समता हिन्दी का केवल भक्तिकाव्य ही कर सकता है।"

छायावाद में जागरण शब्द का प्रयोग सभी कवियों ने अनेक संदर्भ में किया है। यह जागरण सूक्ष्म रूप से सांस्कृतिक नवजागरण और राष्ट्रीय राजनीतिक जागरण ही है। प्रसाद कहते हैं, 'बीती विभावरी जाग री' निराला कहते हैं, 'जागो फिर एक बार' और महादेवी कहती हैं, 'जाग तुझको दूर जाना है'। छायावादी काव्य राष्ट्रीय जागरण की मूल चुनौतियों को गहराई से समझता है, जिस देश में सदियों की पराधीनता के कारण जातीय व सांस्कृतिक स्वाभिमान नष्ट हो चुका हो वहाँ जागरण की पहली शर्त राष्ट्रीय स्वाभिमान की उत्पत्ति होती है।

छायावादी कवि भारत के अतीत से रचनात्मक ऊर्जा ग्रहण करके वर्तमान संघर्षों से जूझना चाहते हैं। अतीत की महानता का वर्णन उनके यहाँ कई बिंदुओं पर नजर आता है–

**'पश्चिम की उक्ति नहीं गीता है गीता है'**

**(निराला)**

**'किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यही**
**कहीं से हम आए थे नहीं, हमारी जन्मभूमि है यहीं'।**

**(प्रसाद)**

छायावादी कवि इस बात को बखूबी समझते हैं कि राष्ट्रीय आंदोलन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक जुझारू मन:स्थिति का होना आवश्यक है। वह कविता के माध्यम से राष्ट्रीय समस्याओं का केवल विश्लेषण नहीं करते बल्कि जुझारू मानसिकता के विकास का प्रयत्न भी करते हैं। जिस तरह से द्विवेदी युग में 'भारत–भारती' ने पूरे राष्ट्र में सांस्कृतिक ऊर्जा को जन्म दिया था वैसे ही छायावाद की कविताएँ भी जनसामान्य में जोश और उमंग पैदा करती है।

छायावादी कविता अपने समय से कुछ ऐसे स्तरों पर भी जुड़ी ह जो साधारण कविताओं के लिए संभव नहीं होता। कविता अपने समय की घटनाओं का वर्णन करे यह कविता की सामाजिक दायित्वशीलता का मात्र एक पक्ष है। छायावादी कविता आगे बढ़कर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करती है। यह अपने समाज की निष्क्रिय तस्वीरें नहीं

बल्कि, समाज के लिए वांछनीय परिवर्तनों के स्तर पर भी सक्रिय होती हैं। 'राम की शक्ति पूजा' की मूल समस्या यही है कि 1936 ई. के भारत में अहिंसात्मक शक्ति निरर्थक प्रतीक होने लगी है।

छायावाद की राष्ट्रीय चेतना अपने अंतिम स्तर पर केवल राष्ट्र तक सीमित नहीं रहती बल्कि संपूर्ण मानवता के स्तर पर सक्रिय हो जाती है। यह भारतीय चिंतन सृष्टि की वही धारणा है जिसमें राष्ट्रीय हितों व वैश्विक हितों को परस्पर विपरीत नहीं बल्कि सुसंगत शक्तियों के रूप में 'वसुधैव कुटुंबकम' का व्याख्यान किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं स्थूल रूप से नहीं किंतु, सूक्ष्म रूप से अध्ययन करने पर छायावादी कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से जुड़ी तो है ही साथ ही मनुष्य के अंदर राष्ट्रीय भावना के विकास में भी सहायक रहीं।

समाज की तत्कालीन परिस्थितियों का साहित्य पर सीधा असर पड़ता है। छायावाद युग (1918–1936) में देश में ढ़ेर सारे प्रमुख आन्दोलन चल रहे थे। जिसका सीधा असर छायावादी काव्यों पर पड़ा। हालाँकि प्रत्येक युग का साहित्य तत्कालीन परिस्थितियों, सामाजिक परिवेश, राजनीतिक और धार्मिक संदर्भों में प्रभावित होता है। भारतवर्ष अंग्रेजों से गुलाम था और उस गुलामी की लपट लखको और कवियों पर भी पड़ी। यही वजह है कि छायावादी युगीन कवियों ने अपनी बात को अधिकांशतः प्रकृति को आलम्बन बना कर व्यक्त किया हैं, छायावाद के प्रतिनिधि कवि जयशंकर प्रसाद ने गुलामी की पीड़ा को इस प्रकार व्यक्त किया है–

**'हिमाद्री तुंग श्रंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती**

**स्वमं प्रभा समुज्वला, स्वतन्त्रता पुकारती।।**

छायावाद एक दार्शनिक अनुभूति ह। महादेवी वर्मा जी का विचार है 'छायावादी में प्रकृति के अन्दर बिखरी सौन्दर्य सत्ता की रहस्यमयी अनुभूति को सुख–दुःखों से मिलाकर एक ऐसा काव्य रूप दिया गया है। जिसमें बह्म के विराट रूप के दर्शन होते हैं और सूक्ष्म सौन्दर्यानुभूति के साथ–साथ सर्ववाद, जड़–चेतन की अभिन्नता, व्यक्तिगत चेतना से व्यापक चेतना की एकता भावात्मक दर्शन आदि का निरूपण किया जाता है।

उधर प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने प्रकृति के माध्यम से जन सामान्य को सचेत करने का प्रयास किया है। उन्होंने आशक्त पड़े भारतोयों को जगाते हुए कहा है कि–

**'छोड़ द्रुमों की मृदु छाया**

**तोड प्रकृति से भी माया**

**बाले! तेरे बाल जाल में कैसे उलझा द् लोचन? छोड़ अभी से इस जग को।।**

महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के काव्यों में राष्ट्रवाद अधिक मुखरित होता है। उनको कविताओं में राष्ट्रवाद के अन्तर्गत राष्ट्र को केवल एक राजनैतिक इकाई न मानकर उसे सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नयन की इकाई माना गया है। निराला जी की लम्बी कविता 'राम की शक्ति पूजा' का नायक 'राम' एक साधारण मनुष्य है। वह इस गुलामी की जड़ता से व्याकुल है। वह अपनी विजय हेतु शक्ति की पूजा करता है। वह शक्ति कोई और नहीं बल्कि देश की जनता का एकजुट होना है। उसी एकता में शक्ति है। तभी किसी भी प्रकार की विजय हासिल की जा सकती है।

**'होगी जय होगी जय हे पुरुषोत्तम नवीन**

**कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।'**

छायावाद के चार स्तम्भा मे से एक कवयित्री महादेवी वर्मा जी की कविताओं में प्रारम्भ से ही विस्मय जिज्ञासा, व्यथा और राष्ट्रीयता तथा आध्यात्मिकता के भाव मिलते हैं। महादेवी जी के काव्यों में कुछ आलोचकों ने निराशावाद की प्रबलता को दर्शाया है, जब कि यह एक करुणा की गहन अनुभूति है।

**'विस्तृत नभ का कोई कोना**

**मेरा न कभी अपना होना।'**

पराधीनता के कारण देश के युवाओं के सामने अपने स्वयं के अस्तित्व की रक्षा करना भी एक चुनौती थी, वे नौकरी के लिए अंग्रेजी व पाश्चात्य ज्ञान के पीछे भागने लगे। अंग्रेजी के माध्यम से देश के युवाओं को जो शिक्षा मिली उसके कारण वह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से

अलग हो गये। इस प्रकार देश की जनता दो वर्ग में बट गयी। एक वे जो भारतीय सभ्यता–संस्कृति द्वारा अपना जीवन निर्माण कर रहे थे और दूसरे वे जो पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के प्रभाव के कारण अपने से भिन्न अस्तित्व बनाने में जुटे थे।

छायावादी कवियों ने समाज व राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए सर्वप्रथम रूढ़ियों एवं पौराणिकता का निषेध किया। नये–नये मानदण्डों व मानकों का सृजन किया। यूरोपीय विद्वानों द्वारा थोपे गये इतिहास को नकार कर नया राष्ट्रीय इतिहास निर्मित किया। कवि किसी राजनीतिक विचारधारा के अनुगामी नहीं थे। इन्होंने हर प्रकार से रूढ़ियों व अंधविश्वास पर प्रहार किया। नये विषय, नयी भाषा, नये छन्द का प्रवर्तन किया जैसा कि पंत जी ने कहाँ–

**'कट गये छन्द के बन्ध'**

**पुरातन का यह निर्मोह**

**सहनन करती प्रकृति पल एक।।**

आधुनिक काल में छायावाद पहली काव्यधारा है जिसने नारी के प्रति आधुनिक और परहेजी संस्कारों से परे हटकर मानव जीवन में समानता का भाव रखा राष्ट्र की प्रगति में दोनों का सहयोग अपेक्षित है। एक सफल मनुष्य के निर्माण में स्त्री की प्रमुख भूमिका होती है। कामायनी में प्रसाद जी लिखते हैं–

**'तुम भूल गये पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की।'**

छायावादी सौन्दर्य चेतना को 'छायावाद' की सबसे प्रमुख साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निधि माना गया है। यह कविता जीवन के आधारभूत तत्वों 'सत्यम', 'शिवम', 'सुन्दरम' में से सौन्दर्य को केन्द्र में रखती है तथा यह सौन्दर्य सत्य और शिव से युक्त है। इन्हीं तथ्यों में नीहित है भारतीय संस्कृति की गौरव गाथा, भारत के सांस्कृतिक गौरव से प्रेरणा पाकर छायावादी कवियों ने देश के लिए सराहनीय कार्य किया, जिस पर हम लोग सदैव गौरवान्वित महसूस करते रहेगें।

पंत की समस्त रचनाएँ भारतोय जीवन की समृद्ध सांस्कृतिक चेतना से गहन साक्षात्कार कराती है। उनकी रचना एक तरफ ग्रामीण जीवन की पीड़ा से बोध कराती है, वहीं दूसरी ओर भारतीय स्थापत्य कला की ज्योति पुंज 'ताज' के गुणों से रू–ब–रू करती है। वे कृषक जीवन में सन्निहित दुःख–दर्द, अभाव और वेदना को गंगोत्री में पाठकों को डुबकी लगाने के लिए प्रोत्साहित करते है। वे 'हिमालय' जैसी हमारी संस्कृति के मूल्यों को अपनी रचनाओं में पिरोकर उनकी महत्ता से लोगों का ज्ञानवदधन करते हैं। प्रसिद्ध उपन्यासकार 'रेणु' ने उनकी कविता 'भारत माता' से 'मैला आंचल' उपन्यास का नाम लिया था। 'भारत माता' कविता में भारतीय सांस्कृतिक मल्यों का उदात्त स्वरूप दिखाई देता है।

छायावादी काव्य पर प्रायः आरोप लगता रहा है कि स्वाधीनता आंदोलन के सघनतम काल में रचे जाने के बावजूद यह काव्य राष्ट्रीय चेतना से कटा हुआ है। छायावादी कविता को स्थल दृष्टि से देखने पर ऐसा लगना स्वाभाविक है, किंतु गहन विश्लेषण से विदित होता है कि यह काव्य अपने समय के सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय संदर्भों को धारण ही नहीं करता, बल्कि उनकी प्रगति में यथासंभव योगदान भी देता है।

व्यक्तिगत स्वाधीनता प्रकृति का अन्यत्र साहचर्य और स्वावलंबी नारी की शक्ति, सहयोग पाकर आधुनिक पुरुष व्यापक सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभाने लगा। वह केवल प्रेम और सौंदर्य के मकड़जाल म उलझा नहीं रहा। उसने केवल प्रेम–राज्य में रूढ़ियों के विरूद्ध आवाज नहीं उठाई, वरन् जीवन के जिस क्षेत्र में उसे विषमता, पराधीनता और अन्याय दिखाई पड़ा, वहीं उसने संघर्ष का बिगुल फूंक दिया। इस व्यापक राष्ट्रीय जागरण का प्रभाव छायावाद पर पड़ा।

कोई भी कविता अपने समकालीन यथार्थ से कई स्तरों पर संबंध स्थापित कर सकती है। कुछ कविताएँ ऐसी होती हैं जो अपने समय की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करके इतिहास बोध का परिचय देती है। घटनाओं के वर्णन से प्रतीत होता है कि कविता अपने समय की दस्तावेज है। दूसरी ओर कुछ कविताएँ ऐसी होती है, जो अपने समय की घटनाओं का रोजनामचा नहीं लिखती, बल्कि सांस्कृतिक–सामाजिक सत्यों का गहरा विश्लेषण करती हैं। ऐसी कविताएँ बाहरी कलेवर में समाज से जुड़ी हुई प्रतीत नहीं होती, पर वास्तव में समाज के

साथ इनका गहनतम संबंध होता है। छायावादी कविता इसी प्रकार अपने राष्ट्र और समाज से जुड़ी है।

छायावाद में 'जागरण' शब्द का प्रयोग सभी कवियों ने अपन संदर्भों में किया है। यह जागरण सूक्ष्म रूप से सांस्कृतिक नवजागरण और राष्ट्रीय–राजनीतिक जागरण ही है। प्रत्येक गुलाम देश में राष्ट्रोयता की भावना का उदय पुनरूत्थान–भावना से होता है। पुनरूत्थान भावना प्रसाद में सबसे अधिक थी। प्रसाद ने भारत के सांस्कृतिक मूल्यों का पुनर्जीवित करने में सराहनीय कार्य किया। उन्होंने 'हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार' या 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' आदि में राष्ट्रीय संस्कृति और इतिहास को स्मरण कर तत्कालीन भारतीय युवकों में राष्ट्रीयता का संचार करना चाहा था। प्रसाद कहते हैं–

**'बीती विभावरी जाग री। अम्बर पनघट में डुबो रही–तारा–घट ऊषा नागरी।'**

छायावादी काव्य राष्ट्रीय जागरण की मूल चुनौतियों को गहराई से समझता है। छायावादी कवि भारत के अतीत से रचनात्मक ऊर्जा ग्रहण करके वर्तमान संघर्षों से जूझते नजर आते हैं। निराला कहते हैं–

**'तोड़ो, तोड़ो, तोड़ो कारा पत्थर की, निकालो फिर, गंगा–जल–धारा।'**

छायावादी कवि इस बात से पूर्णतः सहमत थे कि राष्ट्रीय–स्वाभिमान की स्थिति का होना आवश्यक है, वे कविता के माध्यम से राष्ट्रीय समस्याओं का केवल विश्लेषण नहीं करते, बल्कि जुझारू मानसिकता के विकास का प्रयत्न भी करते हैं। छायावाद की कविताएँ भी जनमानस में जोश और उमंग पैदा करती है।

छायावादी कविता अपने समय से कुछ ऐसे स्तरों पर भी जुड़ी है जो साधारण कविताओं के लिए संभव नहीं होता। कविता अपने समय की घटनाओं का वर्णन करें– यह कविता की सामाजिक दायित्वशीलता का मात्र एक पक्ष है। छायावादी कविता इससे आगे बढ़कर राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक समस्याओं क नई समाधान भी प्रस्तुत करती है। यह अपने समाज की निष्क्रिय, तस्वीरें ही नहीं खींचती, बल्कि समाज के लिए वांछनीय परिवर्तनों के स्तर पर भी सक्रिय होती है। सविनय अवज्ञा आंदोलन की असफलता के बाद गाँधी जी ने लगभग एक दशक तक कोई

भी बड़ा आंदोलन नहीं किया, बल्कि देश में घूम–घूम कर संगठन और लोगों को जागृत करने का काम किया। भारत में अहिंसात्मक शक्ति निरर्थक प्रतीत होने लगी। उसी कालखंड में (1936 ई.) निराला जी भी व्यक्तिगत जीवन में असहाय और असुरक्षित महसूस करने लगे। समपूर्णः छायावाद की राष्ट्रीय चेतना, अपने अंतिम समय में केवल राष्ट्र तक सीमित नहीं रहती, वरन् संपूर्ण मानवता के स्तर पर सक्रिय हो जाती है।

छायावाद के मूल्यांकन का प्रश्न केवल छायावाद युग की कविता के मूल्यांकन से जड़ा नहीं है बल्कि, 19वीं शताब्दी की हिन्दी कविता के साथ उसके साहित्य के बहुस्तरीय उच्चता के प्रश्न से भी जुड़ा है। हिन्दी भाषा हो या साहित्य (खड़ी बोली के संदर्भ में) 19वीं शताब्दी के शुरूआती दशकों में एक ऐसी आधारभूमि का निर्माण करता है, जिस पर चलकर आगे का साहित्य और उसकी भाषा विकसित हुई है। इस निर्मिती में हिन्दी की अनस्थिरता की बहस है, ब्रजभाषा–खड़ी बोली के बीच का विवाद है, कविता की इतिवृत्तात्मकता का प्रश्न हैं और हैं साहित्य के पक्ष–प्रतिपक्ष को लेकर अनेक बहुविध व्याख्याएँ। ब्रजभाषा कविता की श्रृंगारिकता अपन यौवन के सौन्दर्य को खो चुकी थी। 'उद्धवशतक' के आगे न कविता जा रही थी न कवि। ऐसे समय में खड़ी बोली 'पल्लव' के सहारे अपने को विस्तार दे रही थी। ''हिन्दी ने अब तुतलाना छोड़ दिया, वह 'पिय' को 'प्रिय' कहने लगी है। उसका किशोर कण्ठ फूट गया, अस्फुट अंग कट छट गए, उनकी अस्पष्टता में एक स्पष्ट स्वरूप की झलक आ गई, वक्ष विशाल तथा उन्नत हो गया, पदों की चंचलता दृष्टि में आ गई, वह विपुल विस्तृत हो गई, हृदय में नवीन भावनाएँ, नवीन कल्पनाएँ उठने लगीं, ज्ञान की परिधि बढ़ गई, चारों दिशाओं से त्रिविध समीर के झोंके उसके चित्र को रोमांचित करने लगे, उसे चाँद में नवीन सौन्दर्य, मेघ में नवीन गर्जन सुनाई देने लगा।'' 'पिय' से 'प्रिय', उसके चित्त के रोमांच से लेकर नये सौन्दर्य की सृष्टि तक के साहित्य के सफर को उसके ऐतिहासिक विकासक्रम को ध्यान में रखकर ही समझा जा सकता है।

छायावाद का मूल्यांकन भी उसी ऐतिहासिक विकास–क्रम के विश्लेषण– विवेचन पर आधारित होगा, जिस ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया के तहत 'छायावाद' का उद्‌भव हुआ है। 'छायावाद' का प्रयोग मुख्यतः कविता के लिए किया जाता है, क्योंकि छायावाद का सर्वाधिक प्रभाव या

कहें जो भी प्रभाव था वह 'कविता' पर ही देखा जाता है। छायावाद के प्रभाव को लेकर हिन्दी में पहली चर्चा मुकुटधर पाण्डेय के यहाँ मिलती है। मुकुटधर पाण्डेय ने जबलपुर से निकलने वाली एक पत्रिका 'श्री शारदा' के 1920 के चार अंकों में लगातार एक लेखमाला लिखी। इसी लेखमाला में छायावाद की चर्चा है। इस चर्चा में कविता में हो रहे परिवर्तन के साथ 'छायावाद' और उसके प्रभाव को रेखांकित किया गया। इस रेखांकन में (एक ओर जहाँ) राजनोतिक–सामाजिक परम्परा में हो रहे परिवर्तन की तरफ इशारा किया गया और परिवर्तन के प्रभाव को विश्लेषित किया गया। ''यह बीसवीं शताब्दी स्वतंत्रता और नवीनता का युग है। नए–नए विचारों ने आज पृथ्वी पर एक बड़ा भारी परिवर्तन खड़ा कर दिया है। यूरोप, अमरीका आदि पाश्चात्य देशों का तो कुछ कहना ही नहीं, वृद्ध भारत भी आज अपनी पुरानी नींद से जागकर करवट बदलने लगा है। विज्ञान के इस नए युग में लोग देश–जाति के प्राण स्वरूप साहित्य से उदासीन रहें– भला यह कैसे संभव है।''

भाव, रूप और भाषा के प्रश्नों से होते हुए छायावाद ने अपना विकास किया। इस विकास के क्रम में छायावाद ने हिन्दी कविता की भाषा को एक नई ऊँचाई दी। एक ऐसी भाषा जिसमें व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता, उनमुक्तता एवम् कल्पना की ऊँची उड़ान को अभिव्यक्ति दे सके। कल्पना की ऊँची उड़ान ने कविता की पुरानी शैली को तोड़कर 'मैं' शैली (मुक्त–छंद) को संभव बनाया। जहाँ कोई बंधन नहीं था, और यदि था भी तो वह मुक्त था। इस उनमुक्तता के बावजूद उसमें उत्शृंखलता नहीं थी। भाषा और शैली के परिवर्तन ने पुराने सौंदर्यबोध की जगह नए सौंदर्यबोध को निर्मित किया। कल्पना ने नए चित्र बनाए और क्षितिज के पार तक जाकर अपने स्वप्नों को विभिन्न रंगों से भरा। निज के स्वप्नों के विविध–वर्णी शब्द, जो कविता के रूप में आ रहे थे, की शक्ति की सीमा भी उसमें अंतर्निहित थी। शक्ति और सीमा के मूल्यांकन का यह प्रयास 'छायावाद' के उदय के साथ ही शुरू हो गया था। 1920 ई0 में 'श्री शारदा' पत्रिका में मुकुटधर पाण्डेय के लेख से हिन्दी साहित्य में 'छायावाद की पहचान या कहें 'छायावाद' प्रकाश में आया।

**निष्कर्षतः** यह कहा जा सकता है कि छायावादी कवियों ने राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करने के लिए मानव और समाज दोनों का समन्वय किया और तत्कालीन युग में प्रत्येक देशवासी में स्वतंत्रता की भावना को प्रतिष्ठित किया। छायावादी कवियों ने तत्कालीन सामाजिक–व्यवस्था को ध्यान में रखा और अन्योक्ति या समासोक्ति शैली में जन जागरण के लिए अपनी लेखनी को हथियार बनाया। सामाजिक परिवर्तन के वास्तविक स्वरूप और वास्तविक तथ्यों से कवि अनभिज्ञ थे। उसके विषय में कवियों का ज्ञान ओझल था। जो कुछ नवीन चीजें आ रही थी, उसे कुछ–कुछ वे अनुभव करते थे, परंतु संपूर्णता में समझ नहीं पा रहे थे।

**अध्ययन की सीमायें**

प्रत्येक अध्ययन को बोधगम्य एवं यथार्थ तक पहुंचाने के लिए शोध का सीमांकन करना जरूरी है। अगर शोध को विस्तृत बना दिया जाये तो अनुसंधानकर्ता लक्ष्य से भटक भी सकता है। अतः आवश्यक है कि हम लक्ष्य के निकट पहुँचने के लिए सम्पूर्ण अध्ययन की सीमाएं तय कर ले। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने भी अपने अनुसंधान को व्यवस्थित एवं तार्किक बनाने के लिए निम्नलिखित सीमाओं के अंतर्गत सीमांकन किया है। अध्ययन की सीमाऐ :–

- इस शोध का अध्ययन क्षेत्र छायावादी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप की अभिव्यक्ति पर केंद्रित होगा।
- इस शोध प्रबंध में छायावाद के प्रमुख लेखकों की रचनाओं का अनुशीलन करते हुए उनमें व्याप्त राष्ट्रवादी चतना के स्वरूप का अवलोकन एवं विश्लेषण किया जायेगा।
- अध्ययन में छायावादी साहित्य पर उपलब्ध पुस्तकों द्वारा तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण किया जायेगा।
- तथ्या का संकलन मुख्यतः द्वितियक स्त्रोतों पर आधारित है। अतः इस हेतु विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों का भ्रमण कर तथ्यों का संकलन किया जायेगा।
- समस्त तथ्यों के संकलन के पश्चात् उनका विश्लेषण छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति को ध्यान में रखकर किया जायेगा।

## शोध के उद्देश्य

प्रस्तावित शोध अध्ययन निम्न उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिये अभिप्रेरित है :–

- छायावादी साहित्य के विकास, पृष्ठभूमि एवं उसकी विशेषताओं का पता लगाना।
- छायावादी साहित्य की मूल प्रवृत्तियों को उजागर करना।
- छायावादी साहित्य में वर्णित राष्ट्रोय चेतना का विश्लेषण करना।
- छायावादी साहित्य में वर्णित राष्ट्रीय मूल्यों को इंगित करना।
- राष्ट्र की अवधारणा और राष्ट्रीय चेतना का विश्लेषण करना।
- छायावादी साहित्य में वर्णित भाषा एवं शिल्प का विश्लेषण करना।
- छायावादी साहित्यकारों की रचनाओं का राष्ट्रीय चतना के संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- अध्ययन पश्चात् प्राप्त निष्कर्षो का विश्लेषण करना।

## साहित्य का पुनरावलोकन

छायावादी साहित्यकार बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्य की तकरीबन सभी विधाओं में अपनी कलम चलाई है। छायावादी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अभी तक कई शोध कार्य हुए है। परंतु छायावादी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति को लेकर अनंसंधान कुछ कम मात्रा में हुआ है। जिन शोधार्थियों ने छायावादी साहित्य पर शोध किया हैं, उन्में कुछ प्रमुख निम्नांकित है :–

- छायावादी काव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप का आलोचनात्मक अध्ययन –अभिताभ पाण्डेय
- छायावाद में शोक और विरह के संदर्भ –डॉ. सुमिता ज्योति
- छायावाद और उत्तर – काव्यलोक –डॉ. शीतला प्रसाद दुबे
- संकटग्रस्त सामंतवाद का प्रतिगामी सौन्दर्य बोध –डॉ. उमाशंकर सिंह
- हिन्दी कविता : छायावाद के बाद – डॉ. नीरज
- छायावाद और वैदिक दर्शन –डॉ. प्रेमचंद रस्तोगी

## शोध प्रविधि

इस शोध के लिए उन समस्त शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा, जिनसे आंकड़े एवं तथ्य विश्लेषण अध्ययन का संतुलित विकास किया जा सकेगा, जिससे इस शोध कार्य में विश्वसनीयता एवं सुदृढ़ता लायी जा सके एवं शोध कार्य का सुसंगठित विकास हो सके। अध्ययन को मूल्य निरपेक्ष, वस्तुनिष्ठ व प्रामाणिक बनाने के उद्देश्य से प्रचलित शोध प्रविधियों को शोध का आधार बनाया गया है। इस तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए शोध प्रबन्ध को विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक शोध प्रविधि द्वारा व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया जाएगा। समसामयिक सन्दर्भ में उपरोक्त अध्ययन की प्रासंगिकता को रेखांकित करने के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। जिससे कि शोध से प्राप्त निष्कर्षों को समय की कसौटी पर खरा उतारा जा सके तभी शोध कार्य तर्कसंगत होगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया जायेगा। इसके लिए संबंधित पुस्तकों, लेखों, संदर्भ ग्रंथों व सरकारी प्रतिवेदनों एवं पत्र–पत्रिकाओं आदि के उपयोग का पयास किया जायेगा।

प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध में निगमन पद्धति अपनाते हुए छायावादी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति एवं उसके स्वरूप को व्याख्यायित किया जायेगा। शोध के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए इतिहास अध्ययन पद्धति, पांडुलिपियां, शोध प्रतिवेदन, समिति एवं आयोग के रिपोर्ट के आधार पर शोध सामग्री का संकलन किया जायेगा। शोध के लेखन में छायावादी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित करते हुए भाषा एवं शिल्प की जानकारी प्राप्त करने के लिए छायावादी साहित्य की पुस्तकों के अध्ययन को शामिल किया जायेगा। इस हेतु अवलोकन विधि का उपयोग किया जाना प्रस्तावित है। शोध में राष्ट्रीय चेतना के आयामों को स्पष्ट करने हेतु ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग वांछनीय है।

## शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोधकर्ता को स्पष्ट दृष्टि और शोध उपरान्त पाठक को शोध कार्य का सार प्रदान करने में विशेष उपयोगी है। इस शोध विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण शोध विषय को किसी एक परिकल्पना तक सीमित कर पाना विषय की गम्भीरता को अधिक सरल बना देने के समान है, अतः इसके विविध आयामों का अध्ययन करके शोध की कुछ परिकल्पनाओं का निश्चयन किया गया है–

- छायावाद के विकास एवं प्रवृत्तियों को उजागर करना।
- छायावादी काव्य राष्ट्रीय चेतना की सफल अभिव्यक्ति है।
- छायावाद व्यक्तिवाद की कविता है, और व्यक्तियों के विचारा की भावात्मक अभिव्यक्ति राष्ट्रीय चेतना में होती है।
- ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, राष्ट्रीयता प्रकृति प्रेम, सौन्दर्य, प्रकृति विधान छायावाद की मूल प्रवृत्ति है।
- छायावादी काव्य सौन्दर्य में प्रेम चित्रण, वेदना, राष्ट्र प्रेम, रहस्यात्मकता, करूणा, सुख–दुख, अतीत प्रेम, कलावाद, पतिकात्मकता और लाक्षणिकता के स्वर मुखरित होते है।
- महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंद पंत छायावाद के प्रमुख आधार स्तंभ है।
- छायावादी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति खड़ी बोली के रूप में होती है।

## शोध का महत्त्व एवं प्रासंगिकता

हिंदी साहित्य के लंबे इतिहास में छायावाद बीस वर्षों तक चलने वाला आंदोलन था, जो साहित्य के विकास की दृष्टि से यह समय बहुत कम है पर इसका प्रभाव बहुत लंबे समय तक रहा। कल्पनाशीलता के बीच जन्मे इस काव्यांदोलन में व्याप्त जीवन मूल्यों, जीजिविषा तथा जोवंतता हिंदी साहित्य को अमूल्य देन है, क्योंकि इसी कारण यह आंदोलन बाद में प्रगतिवाद के मार्ग को प्रशस्त करता ह। जीवन और समाज के प्रति जिस क्रान्तिकारी प्रवृत्ति का विकास प्रगतिवादी और समकालीन कविता के दौर में हुआ उसका उत्स छायावाद ही है। इस तरह

यदि देखा जाए तो छायावाद और प्रगतिवाद एक दूसरे की प्रतिक्रिया में नहीं वरन् एक दूसरे की पूरक बनकर विकसित हुई है। सामाजिक विकास की एक विशेष अवस्था में छायावाद प्रवृत्ति का क्षरण और प्रगतिवाद का विकास आवश्यक था। छायावाद ने आधुनिक काल के बदले हुए परिवेश को देखने की दृष्टि हिंदी काव्य जगत को प्रदान की। वर्तमान समय में जब अस्मिता के प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गये हैं। भाषा, जाति, वर्ग और संप्रदाय में विभाजित समाज का चित्र हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। खासतौर पर प्रसाद के काव्य में जिस तरह लोकजीवन की प्रतिष्ठा और एक हारे हुए नायक म जीवन जीने की लालसा का प्रयास दिखाई देता है, वह अद्वितीय है। इसलिए कामायनी को कालजयी रचनाओं के अंतर्गत स्थान दिया जाता है। निराला की कविता राम की शक्तिपूजा में भी ऐसी संवेदना का विकास दिखाई देता है। जहाँ राम एक सामान्य मनुष्य की भांति शक्ति की आराधना और मौलिक कल्पना करते दिखाई देते हैं।

वैयक्तिक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की क्षमता छायावाद की ही देन है। छायावादी कवि व्यक्तिगत सुख–दुःख की अपेक्षा अपने से अन्य के सुख–दुख की अनूभूति को महत्व देते थे। हजारी प्रसाद द्विवेदी और शिवदान सिंह चौहान ने छायावादी वैयक्तिकता को उच्च भूमि पर प्रतिष्ठित किया क्योंकि यह प्रवृति सामाजिक चेतना के विरोध में नहीं, बल्कि सामंती रूढ़ियों के विरोध में खड़ी हुई थी, जिसे आगे के रचनाकारों ने सहर्ष स्वीकार किया। हिंदी कविता में आगे चलकर मुक्त छंद की जिस प्रवृति का विकास हुआ, उसकी शुरुआत छायावाद से ही हुई। निराला ने पहली बार मुक्त छंद का प्रयोग करके कविता को तुकबंदी से मुक्त किया। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि छायावादी काव्य आन्दोलन हिंदी काव्य की एक अन्यतम उपलब्धि है। आधुनिक हिंदी काव्य आन्दोलन में यही एक आन्दोलन है जिसे मौलिक काव्य आन्दोलन कहा जा सकता है। यह आन्दोलन एक ओर भारतीय संस्कृति और उपनिषदिक तत्वों को आधुनिक धरातल पर जागृत करने का सफल प्रयास करता है तो दूसरी ओर आगामी प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता आंदोलनों का मार्ग भी प्रशस्त करता है। प्रस्तावित अध्ययन के उद्दश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोध में निगमन पद्धति अपनाते हुए छायावादी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति एवं उसके स्वरूप को व्याख्यायित किया जायेगा। शोध के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए इतिहास अध्ययन पद्धति, पांडुलिपियां, शोध

प्रतिवेदन, समिति एवं आयोग के रिपोर्ट के आधार पर शोध सामग्री का संकलन किया जायेगा। शोध के लेखन में छायावादी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित करते हुए भाषा एवं शिल्प की जानकारी प्राप्त करने के लिए छायावादी साहित्य की पुस्तकों के अध्ययन को शामिल किया जायेगा। इस हेतु अवलोकन विधि का उपयोग किया जाना प्रस्तावित है। शोध में राष्ट्रीय चेतना के आयामों को स्पष्ट करने हेतु ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग वांछनीय है। उपलब्ध अध्ययन की न्यूनता को दृष्टिगत रखते हुए एक शोध प्रबन्ध तैयार किया जायेगा।

## शोध कार्य की प्रस्तावित अध्याय योजना

**प्रथम अध्याय : छायावाद का अर्थ, संप्रत्यय एवं अवधारणा**

1.0 विषय प्रवेश

1.1 छायावाद का अर्थ

1.2 छायावाद का उदय एवं विकास

1.3 छायावाद की प्रकृति एवं विशेषताएं

1.4 निष्कर्ष

**द्वितीय अध्याय : जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना**

2.0 विषय प्रवेश

2.1 जयशंकर प्रसाद व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.2 जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

2.3 जयशंकर प्रसाद के साहित्य में भाषा एवं शिल्प

2.4 निष्कर्ष

**तृतीय अध्याय : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना**

3.0 विषय प्रवेश

3.1 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.2 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

3.3 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्य में भाषा एवं शिल्प

3.4 निष्कर्ष

**चतुर्थ अध्याय : सुमित्रानंद पंत के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना**

4.0 विषय प्रवेश

4.1 सुमित्रानंद पंत व्यक्तित्व एवं कृतित्व

4.2 सुमित्रानंद पंत के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

4.3 सुमित्रानंद पंत के साहित्य में भाषा एवं शिल्प

4.4 निष्कर्ष

**पंचम अध्याय : महादेवी वर्मा के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना**

5.0 विषय प्रवेश

5.1 महादेवी वर्मा व्यक्तित्व एवं कृतित्व

5.2 महादेवी वर्मा के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

5.3 महादेवी वर्मा के साहित्य में भाषा एवं शिल्प

5.4 निष्कर्ष

**षष्ठ अध्याय : अन्य छायावादी साहित्कारों के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना**

6.0 विषय प्रवेश

6.1 अन्य छायावादी साहित्कारों का परिचय

6.2 अन्य छायावादी साहित्यकारों के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

6.3 अन्य छायावादो साहित्यकारों के साहित्य में भाषा एवं शिल्प

6.4 निष्कर्ष

**सप्तम् अध्याय : शोध के निष्कर्ष, सारांश एवं सुझाव**

# संदर्भ ग्रंथ सूची

## (अ) ग्रन्थ


1. नामवर सिंह, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली छठी आवृत्ति–2004,
2. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध, संस्करण–2008, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी, गीतिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1992, आवृत्ति–2010,
4. रामविलास शर्मा, भारतीय साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–1996, आवृत्ति–2006,
5. रामविलास शर्मा, मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 1984,
6. शिवदान सिंह चौहान, साहित्य की समस्याएँ, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–2002,
7. नन्ददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2003,
8. नामवर सिंह, वाद–विवाद संवाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1989, आवृत्ति– 2007,
9. रांगेय राघव; प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड, सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, प्रथम संस्करण–1954
10. धर्मवीर भारती : प्रगतिवाद : एक समीक्षा,, साहित्य भवन, लिमिटेड, प्रयाग, प्रथम संस्करण–1949
11. चंद्रबली सिंह, आलोचना का जनपक्ष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2003
12. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, लोकभारती, प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण– 2005,

13. रेखा अवस्थी, प्रगतिवाद और समानांतर साहित्य, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण–1978,

14. शिवदान सिंह चौहान, आलोचना के मान, संस्करण– 2002, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

15. सुरेन्द्र चौधरी, इतिहास संयोग और सार्थकता, संस्करण– 2009, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद।

16. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, सातवां संस्करण– 2010, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

17. रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पेपर बैक संस्करण, संवत् 2059, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

18. रामविलास शर्मा, भारत की भाषा समस्या, दूसरी आवृत्ति, 2011, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

19. रामविलास शर्मा, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण, पहला छात्र संस्करण–2012, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

20. सज्जाद जहीर, रौशनाई (अनुवादक : जानकी प्रसाद शर्मा), संस्करण– 2000, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

## (ब) पत्र–पत्रिकाएँ

**1.** आलोचना (त्रैमासिक)
2. हंस (मासिक)
3. नई धारा (मासिक)
4. नटरंग (मासिक)
5. साहित्य–धारा
6. साहित्य–सदेंश (मासिक)
7. हिन्द्स्तानी (त्रैमासिक)
8. मधुमती (मासिक)
9. माया (मासिक)
10. कल के लिए (त्रैमासिक)
11. नई कहानियाँ (मासिक)
12. सम्मेलन पत्रिका (त्रैमासिक)

## (स) कोश

1. अमर कोश : चोखम्भा संस्कृत सीरीज, 1968
2. वर्मा रामचन्द्र : मानक हिन्दी कोश, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
3. हिन्दी विश्वकोश : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
4. बुल्के फादर कामिल : हिन्दी शब्दकोश :
5. हिन्दी शब्द संग्रह : नागरी प्रचारिणी सभा, काशी